

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



1
2019

VOL. 160

Founder's Essay

आदतन अभ्यास की शक्ति

चाहे वह जूडो श्रो का प्रदर्शन हो, बेसबॉल का हिट करना हो, या गोल्फ क्लब को स्विंग करना हो, क्योंकि हमें दिखाया गया है कि कैसे कुछ करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम उसे ठीक उसी तरह से प्रदर्शन कर सकते हैं जिस तरह से हमें सिखाया गया था। दैनिक अनुभव के आधार पर ऐसी चीजों का बार-बार अभ्यास करने के बाद ही हम वास्तविक मैच या गेम में उनके तकनीकों का कौशल दिखा सकते हैं।

यह भी इस तरह है। आप केवल एक बार धर्मदेशना को सुनकर उसके तर्क को समझ सकते हैं। लेकिन, यदि आप इसको बार बार सुनने का अभ्यास नहीं करते हैं, आप उसे वास्तव में अपने अन्दर गहरे नहीं बैठा सकते हैं। लोगों को यह भ्रम होने की आशंका है कि वे कुछ भी कर सकते हैं जब वे अपना दिमाग उसमें लगाते हैं। लेकिन हमें आदतन अभ्यास की विशाल शक्ति को नहीं भूलना चाहिए।

एक बार जब किसी व्यक्ति ने अच्छी और बुरी दोनों तरह की आदतें पकड़ ली है, तो ऐसी आदतें उसकी इच्छाशक्ति और उसके निर्णय पर हावी हो जाती हैं, और उनके जीवन के सभी कार्यों को प्रभावित करती है। जब कोई अच्छी आदतें पकड़ता है, तो अनजाने में ही बिना प्रयास के स्वतः क्रियाकलाप बदल जाता है। दूसरी ओर, एक बार किसी ने बुरी आदतें पकड़ ली है, वे उन दिशाओं में ले जाती हैं जो उनकी इच्छा के विपरीत होती हैं।

आप समझ सकते हैं कि आदतों को विकसित करना कितना महत्वपूर्ण है, जो हमारे दैनिक मुठभेड़ों (और उन अनुभवों के प्रति हमारा दृष्टिकोण), साथ ही साथ हमारे सोचने और काम करने के तरीके भी बुद्ध के उपदेशों के समान बैठता है। प्रशिक्षण मैदान जहाँ आप उन आदतों को अपनी दूसरी आदत बनाते हैं, वह है संघ और धर्म केंद्र।

From Kaisozuikan 9 (Kosei Publishing Co.), pp. 30-31

Living the Lotus Vol. 160 (January 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

प्रत्येक व्यक्ति में कुशल मूल है

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



सूखी जड़ों को नमी देना

नव वर्ष की शुभकामनायें! इस वर्ष एक बार फिर, हम अपने मन की खुशी और एकाग्र मन के संकल्प के साथ, आइए हम एक साथ बुद्ध मार्ग पर चलें।

मुझे लगता है कि अभी, आप सभी अपने मन में अपनी निजी संकल्पों और स्पष्ट, ताजा भावनाओं के साथ, अपने अभ्यास में और भी अधिक अध्यवसायी बने रहे हैं।

फिर भी, कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जिनकी परिस्थितियाँ उनको स्पष्ट और तरो व ताजा महसूस करने से रोकती हैं और आशावादी होने में असमर्थ हैं।

यह कहानी किसी ऐसी व्यक्ति की है, जिसे मैंने सुना है कि वह कम उम्र में ही बीमार पड़ गया था और उसे बताया गया कि यह बीमारी उसके बाकी जीवन में निरन्तर साथी बना रहेगा। जब उसे अनुभव हुआ कि उसका भविष्य में कोई आशा नहीं है, वह निराश और निराशा की स्थिति में आ गया। लेकिन आस्था रूपी उसका संरक्षक ने उसे बार-बार आश्वस्त किया कि उसके पास अच्छाई का मूल है।

इस तरह का आश्वासन पाकर, उसका अपने को निकम्मा हो जाने का गम और जीवन के प्रति उसका निराशाजनक दृष्टिकोण गायब हो गया, और यह विचार उनके मन से बुलबुलाते हुए बाहर आ गया कि वह दूसरों के लिए कुछ करेगा और कुछ कर सका।

अमितार्थ सूत्र, समेकित त्रिविध सद्धर्मपुण्डरिक सूत्र का प्रथम सूत्र है, जिसका हम पाठ करते हैं। उसमें एक वाक्यांश है, “जीवित प्राणियों की अच्छाईयों के मूल” को संतृप्त करें (“पुण्य” अध्याय से)। अच्छाई का मूल ऐसा श्रोत हैं जो लाभकारी परिणाम की उत्पत्ति की आधार भूमि है। और मैं उसे बुद्ध-प्रकृति के समान अर्थ में मानता हूँ, क्योंकि सभी में बुद्ध-प्रकृति और विशेषताएँ निहित हैं और हर कोई बुद्ध की अभिव्यक्ति है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि हर किसी में अच्छाईओं के मूल हैं। हालाँकि, उन मूलों के स्वस्थ विकास और बढ़ने के लिए सूखी जड़ों को नमी की आवश्यकता होती है, जो उन्हें ऊर्जा प्रदान करती है।

युवक ने अनुभव किया कि जीवन निराशाजनक है और एक नकारात्मक आत्म-छवि है। उसे किसी ने आश्वस्त किया कि तुम्हारी उपयोगिता है क्योंकि तुम में अच्छाई की जड़ें हैं जो अमूल्य हैं, और जो सूखे पौधे को प्रयास नमी देने में सक्षम है।





अब, वह व्यक्ति अन्य लोगों में कुशल मूल को पोषित कर रहा है, जो उसी कठिनाइयों से पीड़ित हैं, जो उसने स्वयं झेला है, और वह बुद्ध की धर्मदेशना के प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका निभा रहा है।

जागृत होने को कृतसंकल्प लोगों का सच्चा संगठन

जीवित प्राणियों के कुशलमूल को सम्पोसित करना, अमितार्थ सूत्र का यह वाक्यांश आगे इस प्रकार है: “गुणों के क्षेत्र में कुशल मूल की बुआई करना।” यह वाक्यांश हमें अच्छाई के कई बीजों को बोने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो उन कार्यों का आधार बनते हैं, जिनसे दूसरे लोगों और संसार के निमित्त सबसे अधिक कार्य होता है। संक्षेप में, यह बुद्ध की धर्मदेशना में सम्मिलित होकर स्वयं को और अन्य लोगों को खुश रखने के लिए धर्म के प्रचारप्रसार में पक्षधर बनना है। मुझे लगता है कि “अच्छाई का बीज बोना,” लोगों की अच्छाई की जड़ों को नमी प्रदान करने के समान है।

एक कारण है, जिससे सूत्र का यह वाक्यांश, हमें धर्म के प्रचार प्रसार के लिए प्रोत्साहित करता है। बुद्ध के उपदेशों को सुनने के बाद, जैसा कि ऊपर उल्लिखित युवा व्यक्ति का हृदय द्रवित हो गया और वह निराश के गड्ढे से बाहर निकल आता है। उसमें असीम करुणा की भावना जागृत हो जाती है, और वह सोचता है, “अन्य लोग भी मेरी तरह, दुःख से बच निकलें और अनुभव करें कि खुशी उनके सामने है।”

यह संभव नहीं लगता, फिर भी, उस युवक में, जो बीमार और चिन्तित था, प्रारंभ से ही बुद्ध की धर्मदेशना को श्रद्धा से स्वीकारने की योग्यता थी। इस अर्थ में, धर्म के प्रचार प्रसार में हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इस आशा से जी रहे हैं कि हमारे आसपास के लोगों के साथ हमारे अच्छे संबंध होंगे। शब्दों और व्यवहार में दूसरों के प्रति सौम्यभाव और चिन्ता झलकती है जो दुःखी लोगों की अच्छाई के सूखे जड़ को नमी देता है।

जब हम आधारभूत दैनिक धार्मिक कृत्यों, जैसेकि सूत्र पाठ और धर्म का अध्ययन तथा पालन, का निष्पादन करते हैं, हम उन लोगों तक शनैः शनैः पहुँचते हैं जिनका बौद्ध धर्मदेशना से सम्बन्ध नहीं रहा है। ऐसा करके उच्चतम जीवन शैली को पहुँच जाते हैं, जिसकी चर्चा पूर्ववर्ती परिच्छेद में है: “सभी लोगों के, बिना किसी अपवाद के, अंकुरित बुद्धत्व को बढ़ाएँ” (दूसरे शब्दों में, “बुद्ध के बोधि के प्रति हर जगह लोगों को जागृत करना है।”)

मेरे विश्वविद्यालय के संरक्षक ने मुझसे कहा, “प्रचार प्रसार के बिना, कोई धर्म नहीं है।” उनके कथन के पीछे पूर्वापेक्षा यह थी कि हम सभी मित्र बुद्ध की तरह बनने के लिए कृतसंकल्प हैं - जो सच्चे अर्थ में “उन लोगों का एक संगठन है जो जागृत होने के लिए कृतसंकल्प हैं,” जिसमें मुक्ति चाहने वाले सभी लोगों का मन हमेशा शांत रहता है।

From Kosei, January 2019.



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 4: अधिमुक्ति परिवर्त (1)

आस्था और विवेक

विवेक, इस परिवर्त के शीर्षक के दूसरे तत्त्व, का आशय तर्कसंगत सोच है। मन में सोच समझकर निर्णय लेने का मतलब है कि तथ्य सत्य है। जबकि आस्था, पहला तत्त्व, को सोच समझकर मन में बैठाना है, जिसका बोध हुआ है उसकी सत्यता को निर्धारित करना लक्ष्य है।

हम अपने साधारण दैनिक जीवन में इतना सोचने को ही पर्याप्त मानने के आदी हैं कि शैक्षिक या तकनीकी जानकारी को समझने और सिद्धांत के अनुरूप उसे यथोचित उपयोग में लाना ही यथेष्ट है, लेकिन इतना ही अकेले जीवन को सुचारू रूप से चालाने के लिए, पर्याप्त नहीं है, क्योंकि आस्था का होना भी आवश्यक है।

गणना तालिका का एक सरल उदाहरण है जिसका प्रयोग हम प्रतिदिन करते हैं। हमें हर बार सोचने की आवश्यकता नहीं होती है जब हम गणना करते हैं, उदाहरण के लिए, आठ गुणा नौ बहत्तर क्यों हैं। प्राथमिक-विद्यालय के छात्रों के रूप में हमें गणना तालिका पढ़ाया जाता है। यह समझ वास्तव में एक अंतर्निहित विश्वास बन जाता है, इसलिए हम सरलता से गणना कर लेते हैं, निश्चितता के साथ सात बार नौ तिरसठ और आठ बार नौ बहत्तर होता है, और इसी तरह क्रम चलता है। किसी भी सच्चाई के साथ, किसी भी तथ्य के साथ, यह पर्याप्त है, और वास्तव में यह अपरिहार्य है।

जब हम धर्म की देशना पर आते हैं, तो इस तरह की आस्था सर्वथा आवश्यक है। बौद्ध धर्म की धर्मदेशना समकालीन विज्ञान के पूरी तरह से अनुरूप है, इसलिए आरंभ में ही समझ लेना महत्वपूर्ण है, लेकिन मात्र इतना ही पर्याप्त नहीं है। अपनी सोच समझ को गहरा करने से, एक प्रबल भावना जन्म लेती है, जीवन में खुशियाँ आती है और वास्तव में मुक्त हो जाते हैं, जब हम पूरे मन से धर्मदेशना को अंगीकार करते हैं। मन की यह स्थिति धर्मदेशना में श्रद्धा विश्वास आस्था का प्रतिफल है। यद्यपि बौद्धधर्म की धर्मदेशना तर्कसंगत है, परन्तु जबतक इसमें श्रद्धा विश्वास आस्था नहीं है, इसका मूल्य स्पष्ट नहीं होता है।

अब, पाठ की ओर लौटते हुए, हम इस परिवर्त के प्रारंभ में पाते हैं कि चार अन्य शिष्य हैं। शारिपुत्र ने पूर्ववर्ती परिवर्त में दृष्टांत को सुनकर श्रद्धाविश्वास तथा विवेक से पूर्ण सम्पन्न हो गए। अन्य चार शिष्य हैं सुभूति, महाकात्यायन, महाकश्यप और महा-मौद्गल्यायन। वे सभी पूर्ववर्ती परिवर्त के उपायकौशल्य के माध्यम से निहितार्थ पाठ और दृष्टांत को सुनकर श्रद्धाविश्वास तथा विवेक से परिपूर्ण हो गए। पाठ यह है कि सभी लोग समान रूप से बुद्ध-प्रकृति से संपन्न हैं; वह चाहे कोई भी हो, बुद्ध बन सकता है। और यह कि बुद्ध ने लोगों को सभी प्रकार के युक्तियुक्त उपाय कौशल्य के माध्यम से धर्मदेशना को समझाने का प्रयास किया है। युक्तियुक्त उपाय कौशल्य का उद्देश्य लोगों को अपने स्वयं के बुद्ध-स्वभाव की खोज करना और मन की बुद्ध अवस्था को जागृत करने में मदद करना है।

यहाँ चार शिष्यों ने अपने मन और दिल में जागृतभाव की घोषणा की और वे बुद्ध के समक्ष उपस्थित होकर स्पष्ट किया कि कैसे वे तथ्यतः जागृत हुए। ऐसा करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब कोई दूसरों को आध्यात्मिक अनुभव सुनाता है, तो उसका अनुभव स्वयं ही सुदृढ़ और सत्य सिद्ध हो जाता है। महाकश्यप चारों के प्रवक्ता के रूप में खड़े हैं और पुण्डरीक सूत्र के खजाने में से अपना एक अनुभव के बारे में बताते हैं, जो अमीर बड़े और उनके गरीब बेटे का दृष्टांत है।





धनी पुरुष और निर्धन पुत्र का दृष्टांत

एक बार एक लड़का था जो घर छोड़कर निकल गया और पचास वर्ष की आयु तक इधर उधर भटकता रहा। जीवन चलाने के लिए वह रोज नौकरी चकरी करता और किसी गंदी जगह में गंदे लोगों के साथ रात गुजार लेता था। उम्र की छाया और निर्धनता की विभिषका का चिह्न लिए पिता के महल के सामने आ गया।

उसका पिता अपने इकलौते पुत्र के खोने पर दुःखी हुआ और उसकी खोज हर जगह करवाया, लेकिन, उसका कोई सुराख उसे नहीं मिल सका। आखिरकार वह एक अन्य नगर में जा बसा। वह वहाँ का एक धनाढ्य आदमी बन गया। उसका उस नगर में एक विशाल महल था।

भटकते भटकते पुत्र अंत में अनायास ही वहाँ आ गया जहाँ पिता का महल था। महल के सामने से गुजरते हुए, वह वहाँ कुछ काम मिलने का सोचकर अंदर झाँककर देखा। एक भव्य व्यक्तित्व के पुरुष को देखा जो भड़कीले परिवेश में नौकरों चाकरों से घिरा राजा लग रहा था। वह डर गया। भय था कि निश्चित रूप से इस महल में उसके जैसे आदमी को काम पर नहीं रखा जा सकता है। यदि वह अधिक देर यहाँ रह गया, लोग उसे पकड़ लेंगे और उससे जबरन काम लेंगे। वह किसी गरीब बस्ती में अनुकूल जगह खोजने के लिए वहाँ से भागने लगा।

इस बीच, उसके पिता ने कभी भी एक पल के लिए उसके चेहरे को नहीं भूला सका था। वह पुत्र को गेट पर खड़े देखते ही पहचान लिया और तुरंत उसे लाने के लिए नौकरों को भेजा। लेकिन पुत्र को, पता नहीं था कि उसके पिता के मन में क्या चल रहा है। उसे डर लगा कि वह मारा जा सकता है। जब वह उन नौकरों से पीछा छुड़ाने की चेष्टा कर रहा था, वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

ये सब देखकर पिता ने नौकरों से कहा कि उस गरीब को आने के लिए मजबूर नहीं करो। कुछ दिनों बाद उसने दो नौकरों को जर्जर कपड़ों में गंदे बस्ती में भेजा, जहाँ उसका पुत्र था। उन्हें निर्देश दिया कि उसे गन्दगी के ढेर को हटाने के लिए सामान्य से दुगुणी मजदूरी का प्रस्ताव दो। इस तरह वे उसे पिता के घर वापस लाने में सक्षम हो गये। अमीर आदमी ने स्वयं साधारण कपड़े पहनकर उसके पास गया, कोमल शब्दों में बात किया, और



प्रोत्साहित किया, जिससे उसके पुत्र का डर मिट गया। कुछ समय के बाद, उसने उसे बताया कि वह उसे अपने पुत्र के रूप में देखना चाहता है।

निर्धन पुत्र, अपने साथ ऐसे व्यवहार से आनन्दित था, लेकिन वह कभी भी इस भावना से उबर नहीं पा रहा था कि वह एक अधिनस्थ कार्यकर्ता है। पिता ने धीरे धीरे उस पर एक के बाद एक अधिक से अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपने लगा। अन्ततः उसने उसे अपनी सारी संपत्ति का प्रबंधक बना दिया। निर्धन पुत्र ने सच्चाई से भार का निर्वहन किया, लेकिन फिर भी अपनी हीन भावना से मुक्त नहीं हो सका।

समय से निर्धन पुत्र हीनता की भावना से मुक्त हो गया और पिता ने अपनी मृत्यु की प्रत्याशा में, राजाओं तथा प्रमुख नागरिकों को एक साथ बुलाया और घोषणा कि जिस आदमी को ले आये हैं, वह कोई और नहीं, बल्कि वास्तव में उसका अपना पुत्र है और मेरा सारा कोष मेरे पुत्र का है। मेरे निर्धन पुत्र को तब बोध हुआ है कि यह धनी पुरुष वास्तव में उसके पिता हैं। जैसे ही उसे पता चला कि पिता की विशाल संपत्ति उसकी अपनी है, उसके आनन्द की सीमा नहीं रही।

संघ को जागृत होने को कृतसंकल्प लोगों का सच्चा संगठन बनायें

नव वर्ष प्रारम्भ हो गया है। रिश्शो कोसेइ-काइ इंटरनेशनल के निदेशक के रूप में मेरा दूसरा वर्ष भी शुरू हो गया है। इस वर्ष भी, मैं धर्म के अभ्यास का लगन से प्रयास करूँगा। वर्ष के लिए अपनी कृतज्ञता और बोधिसत्व धर्म के अभ्यास को वर्ष का अपना प्रतिपादित विषय बनाऊँगा।

जनवरी के लिए "प्रेसिडेण्ट के संदेश" में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने स्निग्ध शब्दों में और कारुणिक दृष्टिकोण के साथ धर्म के प्रचार प्रसार की आवश्यकता पर जोर देकर, दूसरे लोगों के साथ अच्छा संबंध बनाने को कहा है। साथ ही उनका नया दिशानिर्देश है, जिससे कि हम एक दूसरों को अपने स्वयं के महत्व का बोध कराने में मदद कर सकेंगे। हममें से प्रत्येक ऐसे व्यक्ति बनने की ओर बढ़ रहे हैं जो संकट में दूसरे लोगों की सहायता कर सकें, उनके जीवन को सहल बना सकें।

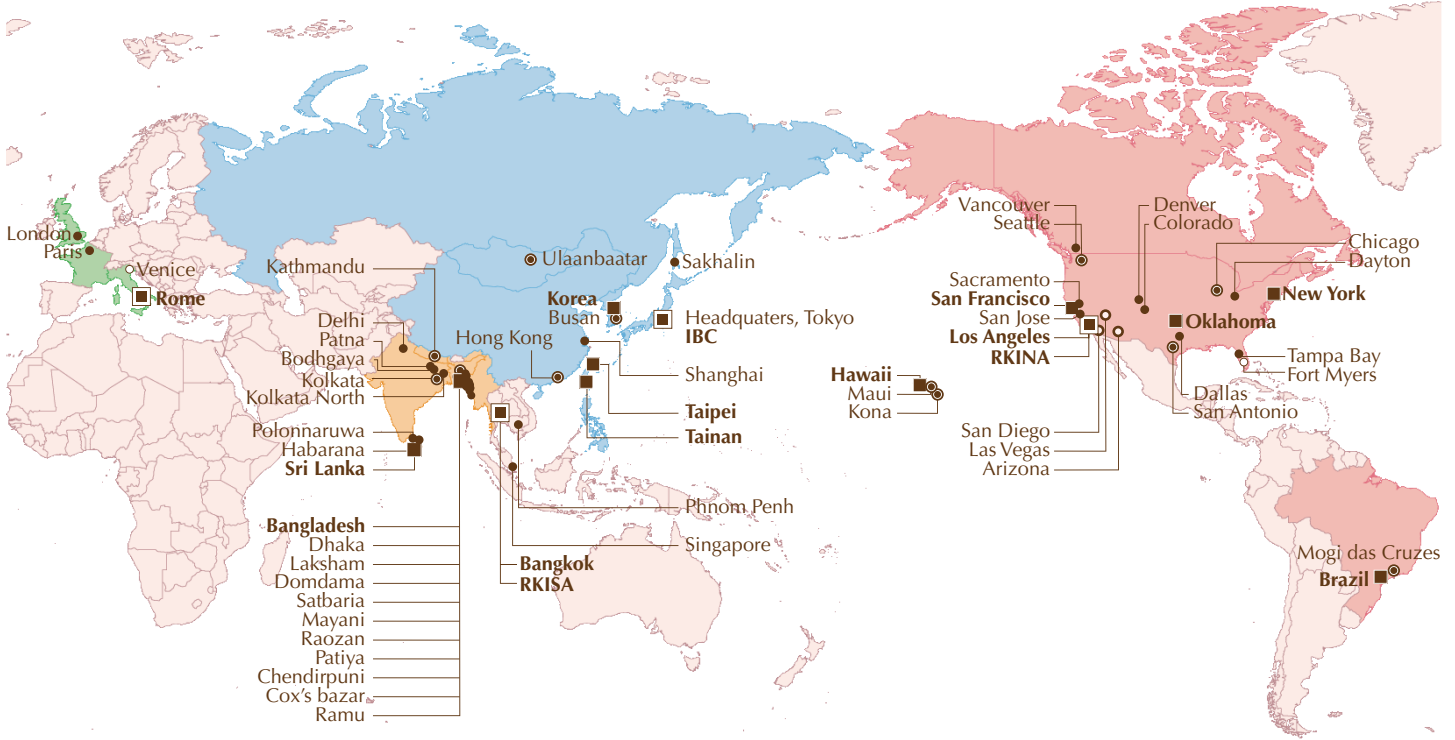
इस वर्ष, रिश्शो कोसेइ-काइ धर्म के प्रचार प्रसार की साठवीं वर्षगाँठ संयुक्त राज्य अमेरिका में मनाएगा। अर्थात् यह कि संस्थान के अन्तराष्ट्रीय धर्म के प्रचार प्रसार के प्रारंभ की भी साठवीं वर्षगाँठ है। मैं आशा करता हूँ कि हम सभी धर्म के प्रचार प्रसार के प्रारंभिक बिन्दु पर लौटेंगे और रिश्शो कोसेइ-काइ को जागृत होने को कृतसंकल्प लोगों का संगठन बनायेंगे और संसार भर के सदस्यों को साथ लेकर संस्थान को आगे ले जायेंगे।

पुण्डरीक सूत्र की धर्मेदेशना के माध्यम से संसार भर के लोगों के उद्धार में संलग्न साझा मिशन में इस नये वर्ष में भी आपके पूर्ण सहयोग की आकांक्षा है।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इंटरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
 Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224
 e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
 e-mail: info@rkina.org <http://www.rkina.org>

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
 Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
 e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
<http://buddhistlearningcenter.org/>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
 P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, U.S.A.
 Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
 e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
<http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
 Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
<http://www.buddhismtampabay.org/>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
 Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
 e-mail: info@rkhawaii.org <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
 Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.
 Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
 e-mail: rk-la@sbcglobal.net <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
 Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
 e-mail: info@rksf.org <http://www.rksf.org>

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
 Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
 e-mail: rkny39@gmail.com <http://rk-ny.org/>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
 Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
<http://rkchi.org/>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

<http://www.rkftmyersbuddhism.org/>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
 Tel: 1-405-943-5030 Fax: 1-405-943-5303
 e-mail: rkokdc@gmail.com <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
 Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
<http://www.rkina-dayton.com/>

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
 CEP 04116-060 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 Fax: 55-11-5549-4304
 e-mail: rissho@terra.com.br <http://www.rkk.org.br>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
 CEP 08730-000 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongheng District,
Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
<http://kosei-kai.blogspot.com/>

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan

Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224

e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibrk-rk.org/>

Branches under the Headquarters**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation

Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,
Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna**Rissho Kosei-kai of Singapore****Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh

Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh

Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka

Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Branches under the Headquarters****Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia

Tel & Fax: 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of Paris**